Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

पद्मश्री डॉ. उषाकिरण खानक उपन्यासमे सामाजिक संदर्भ

मेघा झा
शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

Article Info
Volume 5, Issue 5
Page Number : 39-44

Publication Issue :
September-October-2022

Article History
Accepted : 01 Sep 2022
Published : 10 Sep 2022

मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध लेखिका, विदुषी, पद्मश्री सँ अलंकृत, अनेको पुरस्कार सँ पुरस्कृत पद्मश्री उषाकिरण खान मैथिलीक विभिन्न विधाक पुस्तक सँ मैथिली साहित्यक भंडार के समृद्ध कयलनि अछि। मैथिली साहित्य मे ई उपन्यास, नाटक, कथा संग्रह, बाल उपन्यास, खण्डाकाव्य आ अनुवाद लिखने छथि। उपन्यास मे पहिल उपन्यास अनुतरित प्रश्न (1984), दोसर दूर्वाक्षत, तेसर 'हसीना मंजिल' (1995), चारिम भामती, पाँचम पोखरि–रजोखरि आ छठम मनमोहना रे (2020) मे लिखलनि अछि। कथा–संग्रह मे – 'काँचहि बाँस' आ 'गोनु झा क्लब' छनि। खण्डकाव्य मे 'जाइ सँ पहिने', बाल–नाटक मे 'बालमहाभारत'। 'भुसकौलवला', चानोदाई, 'फागुन' आ. 'एकसरि ठाढ़' नाटक छनि। बाल–नाटक मे 'घंटी सँ बन्हल राजू' आ 'बिरहो आबि गेल' छनि। अनुवाद मे –नवतुरिया आ मर्यादा भंग छनि।

हिनक पहिल उपन्यास अनुतरित प्रश्न अछि जे 1984 ई० मे प्रकाशित भेल छलैक। "एहि उपन्यासमे स्वातन्त्र्योतर कालक तुलनात्मक पृष्ठभूमिमे स्वतंत्रता–आन्दोलनक कर्णधार क्रांतिकारी समरेश मिश्रक बलिदानक कथा वर्णित अछि। कथाक माध्यमसँ लेखिकाक मन्तव्य अछि जे आइ–काल्हिक आन्दोलनकर्ता लोकनिमे तादृश त्याग, सहिष्णुता, दृढ़ता ओ आत्मविश्वासक भावना नहि छैन्हि जतबा स्वतंत्रता आन्दोलनक नेता लोकनिमे छलैन्हि। ई लोकनि पारिवारिक कष्ट सँ विचलित भए झट आत्म–समर्पण कए दैत छथि, तखन हिनका लोकनिसँ देशक सत्ता ओ समाज बटलबाक आशा व्यर्थ। एहि उपन्यासक अन्य प्रमुख पात्र छथि सुमिता ओ मन्दाकिनी।"[1] सुमिताक पिता स्वतंत्रता सेनानी रहथिन आ सुमिता स्वयं जिलाधिकारी छलथि। ओ ओहि स्वतंत्रताकालीन मूल्य सभसँ अवगत छली मुदा आबक स्थिति देखि हुनका मोनमे बहुत प्रश्न सभ उठैत छनि, तकर उत्तर नहि भेटैत छ।न अनुत्तरित उपन्यासमे समाजमे जाहि प्रकारक घटना घटैतं अछि, ओकर वर्णन, विश्लेषण ठाम–ठाम पर

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

कएल गेल अछि। एहि उपन्यासक नायिका सुमिताक जखन जन्म भेलैक तखन हुनक मायकेँ कतेक घोर पीड़ा भेलैक, से देखल जाय–

"प्रसव पीड़ाक चरम परिणति। गुलाबी ज़ाड़क गहन रात्रि, तैयो स्वेद–कणसँ सौंसे शरीर नहा गेलनि, क्षण भरिक लेल होश गमा देलनि, एकटा दाँत कीचल सन कनबाक स्वर आ नवागन्तुकक जन्म, फेर सभटा शांत। मोन–मस्तिष्क–देह सभटा हल्लुक छोड़ि देलखिन। नर्स जखन बच्चा देखलखिन तऽ संतोषक एकटा लहरि सम्पूर्ण शरीरमे दौड़ि गेलनि। पुनः एक क्षण लेल उदास भेलीह, बालिका छथि, एहने प्रसव–पीड़ा एक दिन हिनको सहय पड़तनि।

एहि तरहक पीड़ाक अनुभव समाजमे सभ स्त्री वर्गके करय पड़ैत अछि, जखन ओ अपन संतानके जन्म दैत छथि। जहिना सुमिताके माताके प्रसव पीड़ा सहय पड़लनि जखन सुमिता के माता सुनलनि कि लड़की भेल त ततक्षण हुनक मनमे ई विचार अयलनि जे एहने पीड़ा एक दिन हमर पुत्रीयो के सहय पड़त। ई सोचिक' ओ उदास भ' जाइत छथि।

हिनक दोसर उपन्यास दूर्वाक्षत अछि जकर प्रकाशन 1987 ई. मे कराओल गेल छलैक। एहि उपन्यासमे नारी जागरण देखाओल गेल अछि। एहि उपन्यास मे नारी शक्तिक आह्वान कएल गेल अछि। मंगला एहि उपन्यासाक नायिका छथि। "एहि मध्य मंगलाक मुख्य मनोविश्लेषणात्मक चरित्र–चित्रण कएल गेल अछि जे अपन भाई आ पिता द्वारा अपन माता पर कएल गेल दुर्व्यवहार आ अपमान सँ तथा अपन दाम्पत्य जीवनक विसंगतिसँ क्रांतिदर्शिनी भए समस्त पुरुष– परिवारकेँ त्यागि, अपन पति सँ .सेहो तलाक लए अपन स्वतंत्र, आत्मनिर्भर जीवन स्थापित करैत अछि एवं अपन परित्यकता माताकेँ उद्धार करबाक निश्चय करैत अछि। वस्तुतः ई उपन्यास आधुनिक नारी जागरणक क्रांतिदर्शन थिक जे युग–युगसँ पुरुष समाजक अत्याचारक पाटपर पिसाइल आबि रहल अछि। सशक्त भाषा–शैली ओ अन्तर्जगतक सूक्ष्म निरूपण दृष्टि सँ ई उपन्यास एक सफल कोटिक कथा रचना थिक।"[3]

दूर्वाक्षत उपन्यासमे समाजमे जाहि तरहक घटना घटैत अछि ओकरे लेखिका उजागर कएने छथि। हम सब जे समाजमे रहैत छी, से पुरुष प्रधान समाज अछि। पुरुष सभ दिन सँ अपन वर्चस्व स्थापित कएने छथि आ हरदम अपने आगाँ बढ़य चाहैत छथि। देखल जाए उपन्यासकारक किछु पाँती–

"मंगला आइ. ए.मे प्रथम श्रेणीमे पास कयलनि। संगी साथी सभ बधाइ देब' आयल छलनि। मंगला प्रसन्न मोने मधुर खोआब'मे लीन रहथि। संगी सभ टिरकू झाकेँ सेहो बधाई दैत रहलनि जे एहन तेजगरि कनियाँ भेटलनि अछि आ टिरकू झा 'हें–हें–हें–हें' करैत दाँत निपोरैत रहलाह।"[4]

मंगलाके आइ. ए.मे प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेला पर ओकर पति टिरकू झा फुसि हँसी हँसैत छथि। लोकके देखबय लेल जे हम अपन पत्नी के पास भेला पर खुश छी मुदा ओ एहि सँ खुश नहि छलथि। दूर्वाक्षत उपन्यासमे एहि क्षणक वर्णन कोन रुपेँ कयलीह अछि? से पाँती देखल जाय –

"खाली पढ़ाई–लिखाइ कयने गुजर नहि चलयबला अछि, बुझलौ? भोजन बनायब, घरक काज करब, इएह सभ जीवनक सत्य थिकैक। पिता चिबा–चिबा बजलनि। मंगलाक सम्पूर्ण देह जेना काठकोरो भ' गेलनि। पिता जी की कहैत छथिन जहियासँ अकिल भेल छनि, भनसीया रहओ वा नहि, मंगला भानस–भात काज माथपर उठौने छथिन। भाई सभ हाट बजारक काज करैत छैक। एकटा अलिखित समझौतामे बान्हल छै सभ। कहियो मंगला कैं केयो किछु नहि कहने छलै। ई की भेलै। आ आइ बाबूजीकैं प्रसन्न चाहै छलनि। मैट्रिकमे प्रथम श्रेणी भेटलापर कतेक प्रसन्न भेल छलाह! आब ध्यान देलनि मंगल। पिताजी एको बेर किछु नहि बाजल छलथिन। छोट बहिन मंजुला जे अइ बेर द्वितीय श्रेणीमे मैट्रिक पास कयलनि, अखबार लऽ दौड़लनि पिता लग किन्तु पिता कोनो प्रकारसँ ई बुझ' नहि देलनि जे ओ प्रसन्न छथि। ई की भेलै? पिताजी किएक तमसाएल छथिन? भाई दिस मंगला तकलनि। ओ एकटा विद्रूप ओढ़ने बैसल रहय जेना। पति जल्दी–जल्दी कओर जेना घोटने जाइत छलाह।"[5]

प्रस्तुत पाँती सँ ई बुझना जाइत अछि जे. मंगलाक पिता, पति आ भाई तीनू मंगलाक पढ़ाईसँ खुश नहि छथि। पुरुष सभ इएह चाहैत छथि जे स्त्री घरक काम–काज समहारैय। प्रायः समाजमे एहन देखल जाइत अछि। लेखिका एहि विषयकैं 'दूर्वाक्षत' उपन्यासमे देखौने छथि।

उषाकिरण खानक तेसर उपन्यास 'हसीना मंजिल' अछि जकर प्रकाशन 1995 ई.मे करौलनि। 'हसीना मंजिल'मे दू पीढ़ीक कथा कहल गेल अछि। ई उपन्यास लहेरी चूड़िहारिन मुस्लमान स्त्रीक जीवनपर आधारित अछि। मैथिली उपन्यास मे एहन विषयसँ सम्बन्धित रचना नहि भेल छल। "सम्पूर्ण उपन्यासमे बूढ़ा उसमानक दर्द पसरल अछि। बूढ़ा उसमान जे कहियो जवान छल। देकुली सँ एहि नगर अपन बाबू संगे शीशावला कंगना पहुँचाब' आबय। दुर्गापूजामे लहठी बहुत रास बिकाइ। ओहिठाम एक दिन ओकर लगन के गप भेलै। हसीना संग निकाह भ' गेलै बीस टाका दैन मेहरक करार पर। से हसीना छल गजब के सुन्नरि। हसीना गौना भेलाक कइएक बर्षक बाद एब जखन गढ़ुआरि भेल तखनहिं लहेरियासरायमे दंगा–फसाद भेल छलैक। आगि पझा गेलै मुदा किछु गोटेक हृदय क्षत–विक्षत भ' गेलै। किछु लोक नीक भविष्य आ नवका सपनाक कारणे पड़ाय चाहैत छल। उसमान तकर प्रारम्भ केलक। ओ पाकिस्तान चल गेल। हसीना मुदा ओकरा संग नहि गेलै। उसमान पाकिस्तानमे उद्योग–धंधा केलक। विवाह केलक। सुख सँ रह' लागल। एम्हर उसमानक बेरूखी सँ दुखी खाना–खोराक लेल तरसैत हसीना खुल्ला करा'क' उसमानक छौ मास असरा देखलक। जखन ओ नहि आयल

त' अपनहि बहिनोइ अहमद मियांक धरनी भ' गेल। एहि सँ पूर्व एकटा बेटी भेल रहैक सकीना। श्रमशील नारीक आत्मविश्वास हसीनामे भरल छलैक।

सैह गुण ओकर बेटी सकीनामे आर नीक जकाँ अयलैक। उसमान पूर्वी पाकिस्तानमे रहय। जखन बंगलादेश बनलैक त' ओकर संसारे उनरि–पुनरि गेलैक। पड़ा क' भारत आयल। घुमैत–फिरैत पुनः लहेरियासराय। सभ दिन पहिने ठेंगा ढुक–ढुकबैत सकीनाक घर लग चल आबय। सकीनाके चीन्हि गेल जे ओकरे बेटी छियैक। अपन परिचय मुदा ओकरा नहि देलकै। सकीनाक लहठी 'नगीना' खूब बिकाय लागल रहैक। सकीनाक व्यापार बढ़ैत गेलैक। अपन दोकान खोललक अपने घरमे। नाम रखलक 'हसीना मंजिल'। अन्तमे सकीना अपन अब्बा उसमान के सेहो चिन्हलक। हसीना मंजिलमे उसमान अपन आखिरी सांस लेलक। एहि उपन्यासमे पाकिस्तानक संग अरबक जगमगी मुसलिम पुरुष सभकेँ आकर्षित करैत छैक। सकीनाक पति समद अरबमे कमाइत अछि। आब सकीनाक देह ओकरा पसीना जकाँ महकैत बुझाइत रहैक। ओ दोसर स्त्री सँ विवाह क' लेलक। मुसलिम परिवारक दू पीढ़ीक मानसिकता एहि उपन्यासमे जगजियार भेल अछि। ई उपन्यास हसीना आ ओकर बेटी सकीनाक कर्मठता, उद्यम, अपन अस्तित्व कायम करबाक संघर्ष आ अन्ततः समाजमे प्रतिष्ठा प्राप्त करबाक कौशल सं साम्प्रदायिक सौहार्दक दृष्टि सँ महत्वपूर्ण अछि।"[6]

उसमान रोजी–रोटी लेल अपन देश छोड़ि पाकिस्तान जाय चाहैत अछि आ अपना संगे हसीनाकेँ सेहो चलय लेल कहैत अछि। 'हसीना–मंजिल' उपन्यासक किछु पाँती देखल जाय – "हसीना, तोरा सँ पुछक कोन काज। तौं बड़ बुधियारि भेली हय? ऐं हे तोरा तँ खाली समान बन्हबाक छह आर की? चलह तैयारी करह। दू एक दिन मे चलक छैक।"[7]

"हसीना, हम तोरा सँ एकटा गप्प कहै छियह, धियान सँ सुनह। हमरा संग पाकिस्तान चलह। ओतय नव राज मे बड़ पूछि छैक। एतय के पूछत अपना आर के। बतीस दाँतक बीचमे आँकर पाथर जकाँ रहब। हसीना ओकरा बलिष्ठ बाहि सँ छिटकी गेलै। की ने की भेलै कि उठि कए बैसि गेलै।"[8]

एहि तरहक प्रसंग बात अपनो समाज मे होइत अछि। पुरुष सभ विदेश जायमे कनियो नहि हिचकिचायत छथि मुदा स्त्री हरदम अपन जमीन सँ जुड़ल रहय चाहैत छथि। विशेष क' मिथिलांचलक स्त्री अपन देश नहि छोड़य चाहैत छथि। ओ अपन माटि–पानि सँ हरदम जुड़ल रहय चहैत छथि।

हिनक चारिम उपन्यास 'भामती अविस्मरणीय प्रेमकथा' अछि। एकर प्रकाशन 2007 ई. मे कराओल गेल छह। एहि उपन्यास पर उषाकिरण खान केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2010 ई. मे भेटलनि। एहि उपन्यासमे वाचस्पति मिश्र आ हुनक पत्नी–भामतीक मुख्य कथा अछि त' विभिन्न उपकथा सेहो अछि। एहि कथा, उपकथाक माध्यमे ओहि कालक ग्रामीण समाज, समाजमे विद्याक प्रति लोकक अनुराग, शिक्षा व्यवस्था लेल समाजक दायित्व,

बौद्ध तांत्रिक सभक द्वारा अक्षत कुमारि कन्या सभक अपहरण, समाजमे कन्या लोकनिक अध्ययन–मनन सम्बन्धी परम्पराक अधोमुख होयब, स्त्री लोकनिक अपन लौकिक, संस्कृतिक संरक्षणक कोशिश आदि विभिन्न बात–विचार रोचक ढ़ंग सँ आयल अछि। पं. वाचस्पति मिश्र आ भामतीक दक्षिण यात्राक बात धुरि क' अमला पर भामतीक देहावसान आ पं. वाचस्पति मिश्रक भामती द्वारा संरक्षित पाठशालाक उद्धार क नव पण्डितक निर्माणमे लागि जगबाक कथा सँ उपन्यासक समापन होइत अछि।"[9]

दशम शताब्दी मे जाहि प्रकारक घटना समाजमे घटलैक, तकर एहि ठाम देखाओल गेल अछि। देखल जाय किछु पाँती–

"समाज मे सनातनी तथा बौद्ध तांत्रिक लोकनि अमरलत्ती जकाँ पसरल छल। बज्रयानी तंत्र यात्री लोकनि भाँति–भाँतिक साधना वास्ते अक्षत कुमारिक टोहमे रहय लगलाह। बड़ जोर हल्ला छलैक जे बंग आ गौड़िय देशमे पाठशाला सँ किशोरी लोकनि के उठबा लेल जाइत छैक। आब उठौनिहार भाँति–भाँतिक लोक होइत छैक। ताहिमे अधिकतर कोलाचारी वज्रयानी लोकनि छलाह।"[10]

दशम शताब्दी मे बालिका लोकनिकेँ अपहरण होइत ओहिना आइयो बहुत भ' रहल अछि आ एहि तरहक अपहरण सँ समाज भयभित अछि।

पोखरि–रजोखरि उषा जीक पाँचम उपन्यास अछि जकर प्रकाशन 2017 ई. मे प्रकाशित कराओल गेल। "पोखरि–रजोखरि उपन्यास तऽ पूर्णतः प्रायः एक सय वर्षक इतिहासे थिक। ओना स्वतंत्रता आन्दोलनक समय सँ लऽ कऽ वर्तमान कालक मैथिल समाजक एहिमे झलकी अछि। एक दिस स्वतंत्रता आन्दोलनक परिस्थितिक चर्चा अछि तऽ ताहि कालक मैथिल समाजमे स्त्रीगणक दशा ओ दिशाक जनतब। हमर हिसाबे एहि उपन्यासमे मिथिलाक स्त्री विमर्शक' लेखा–जोखा प्रस्तुत अछि।

"उषा जी एहि उपन्यासमे नवतुरियाकेँ समर्पित करैत ई बुझेबाक चेष्टा कयलनि अछि जे अपन जे समाजक मर्यादा अछि अपन जे पुरुषक योगदान अछि आ समाज ओ देशक प्रति समर्पण रहल अछि तकर विषय मे सेहो जनतब लय आगू बढ़ी। समाज मे जे एक दोसरक प्रति घृणा, ईर्ष्या–द्वेषक प्रसार बढ़ल जा रहल अछि तकरा छोड़ि अपन सांस्कृतिक परंपरा ओ समाजक रहन–सहनक, विषयमे सेहो विचार कय तदनुरुप आचरणमे सुधार करथि।"[12]

मिथिला समाजक स्त्रीगण सभके सादगी नीक लगैत छनि। पोखारि–रजोखरिक किछु पाँती देखल जाय–

"ई गाँव छै कि कलकत्ता छइ गे दाइ, लोकक घर आंगन बिगड़े छइ। एहन छन्हि तँ बाँध मे जाक' घर बना लेथ।" स्त्रीगण सभ के कोन खौजाहटि छलनि से नहि जानि। अपना के बन्हन मे राखि सुख पबैत छथि।

मुँह मे जाबी, हाथ मे हथकड़ी आ दाग जकाँ नूआ लेपटाएल ककरहु नीक लागहु कि नहि–स्त्रीगण आ सेहो मिथिलाक नारी कैं जरूर सोहाइत छनि। अनसोहाँत लगइत छनि– पघाड़ीवाली कें दू आखरक बोध, ओकर आंगी पहिरब, तहमद जकाँ नूआ तर डेओढा बान्हब, सबा दिन केश थकरब, जुट्टी गूहि क' लटकाएब, टिकुली साटब आ ससुर कैं ठाँव पीढ़ी क' क' आदर सहित खोआएब। सभ्य समाजक काज स्त्रीगण कैं अनसोहाँत लगबे करतनि किएक तँ ओ नइहर सासुर मे इएह सभ ने देखलखिन। ने त' पधाड़ीवाली कैं ने हुनका सासु आ ससुर कैं कोनो प्रकारक चिंता छनि जे के की बजैत अछि?"[13]

निष्कर्षतः हम देखैत छी जे समाज मे जाहि प्रकारक घटना घटैत अछि, उषाकिरण खान ओहि सभ सामाजिक घटना के अपन उपन्यासमे देखेबाक प्रयास कयलनि अछि। मिथिलाक लोक जाहि परिस्थिति सँ गुजरैत छथि, ओकरे अपन उपन्यास मे स्थान देने छथि।

संदर्भ सूची :–

1. मैथिली साहित्यक इतिहास–डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ0–375
2. अनुत्तरित प्रश्न–डॉ. उषाकिरण खान, प्रकाशन मंच, द्वितीय संस्करण, 2013, पृ0–3
3. मैथिली साहित्यक इतिहास–डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ0–375, 376
4. दूर्वाक्षत–डॉ. उषाकिरण खान, मैथिली अकादमी, पटना, 1987, पृ0–8
5. दूर्वाक्षत–डॉ. उषाकिरण खान, मैथिली अकादमी, पटना, 1987, पृ0–9
6. सांध्य गोष्ठी–अशोक, मनुमानस प्रकाशन, पटना, नवम्बर 2020, पृ0–7
7. हसीना मंजिल–डॉ. उषाकिरण खान, प्रकाशन मंच, द्वितीय संस्करण, 2013, पृ0–40
8. हसीना मंजिल–डॉ. उषाकिरण खान, प्रकाशन मंच, द्वितीय संस्करण, 2013, पृ0–41
9. सांध्य गोष्ठी–अशोक, मनुमानस प्रकाशन, पटना, नवम्बर 2020, पृ0–9
10. भामती–डॉ. उषाकिरण खान, शेखर प्रकाशन, पटना, द्वितीय संस्करण, 2017, पृ0–24
11. सांध्य गोष्ठी–डॉ. शिव कुमार मिश्र, मनुमानस प्रकाशन, पटना, नवम्बर 2020, पृ0–5
12. सांध्य गोष्ठी–डॉ. शिव कुमार मिश्र, मनु मानस प्रकाशन, पटना, नवम्बर 2020, पृ0–5
13. पोखरि–रजोखरि–डॉ. उषाकिरण खान, शेखर प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 2017 पृ0–13